Emerging Trends in Education [Vol. V - No. 1 . pp 35-43]

छात्राध्यापकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 अमिता पाण्डेय भारद्वाज

भूमिका :

विगत दो दशकों में शिक्षक एवं शिक्षण की प्रभाविता ज्ञात करने के लिए प्रयुक्त प्रतिमानों एवं उपागमों में तबदीली स्पष्टतः दृष्टिगोचर हुई है। इस परिप्रेक्ष्य में अभिवृत्ति को शिक्षण प्रभाविता के महत्वपूर्ण घटक के रूप में स्वीकार किया गया है। **ब्रूस डब्लू टकमैन** (1995) ने अपने पत्रक (काम्पीटेन्ट टीचर) के तहत शिक्षक की अभिवृत्ति को चार आयामों में विभक्त करते हुए शिक्षण प्रभाविता एवं शिक्षक की प्रवीणता का विवरण प्रस्तुत किया है। ये हैं–शिक्षण सामर्थ्य, नियन्त्रण की संस्थिति, शिक्षक प्रत्याशा एवं शिक्षक उत्साह। ये सभी घटक शिक्षक की अभिवृत्ति से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित हैं तथा शिक्षक की कार्यकुशलता एवं उसकी प्राथमिकता के निर्धारक होते हैं। इस सम्बन्ध में शोधों द्वारा प्रचुर मात्रा में साक्ष्य उपलब्ध हुए हैं। भारतीय सन्दर्भ में भी इन प्रवीणताओं की भूमिका के प्रति शोध की ओर पर्याप्त रूचि प्रदर्शित की गई है। इस क्रम में अध्यापक–शिक्षा परिषद् तथा भारतीय विश्वविद्यालयों द्वारा पोषित शोध कार्यों में शिक्षकों की अभिवृत्ति के बारे में विशेष चिन्ता मुखर हुई है तथा अध्यापक शिक्षा में नव प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति के बारे में अध्यापक शिक्षा के पाठ्यक्रमों में अपेक्षित स्थान देने की संस्तुति की जा रही है। इन प्रशिक्षुओं की अध्यापक–शिक्षा, शिक्षा तथा शिक्षण में निर्धारित पाठ्यक्रमों के प्रति अभिवृत्ति जाँचने–परखने की कोशिश भी की गई है जिससे प्रशिक्षण के पाठ्यक्रमों को विषय–वस्तु की गहनता के साथ–साथ अभिवृत्ति रूपान्तरण की ओर उन्मुख करने में साधक बनाया जा सके।

विश्वविद्यालय स्तर पर परम्परागत एवं आधुनिक संवर्ग के प्रशिक्षुओं को उपलब्ध कराये गये पाठ्यक्रमों में भी अभिवृत्ति सृजन की ओर संवेदनशीलता लाने की अनेकानेक अपेक्षायें मुखर हुई हैं। प्रस्तुत शोध–पत्रक में इन प्रशिक्षुओं की शिक्षण व्यवस्था के प्रति अभिवृत्तियों का अध्ययन इस प्रयोजन से किया गया है कि उनकी अभिवृत्तियों में प्रेक्षित अन्तरों को ज्ञात कर अध्यापक शिक्षा के पाठ्यक्रमों को यथा सम्भव परिवर्तन के दायरे में लाया जा सके तथा उनमें वांछित विभेदीकरण के आयामों को प्रभावी ढंग से चिन्हित किया जा सके। इससे प्रशिक्षण संस्थाओं में कुशल एवं शिक्षण व्यवसाय के प्रति सकारात्मक दृष्टि रखने वाले भावी अध्यापक तैयार करने का मार्ग प्रशस्त होगा।

---

* एसोसिएट प्रोफेसर शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली।

शोध का औचित्य :

शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति को शिक्षण की प्रभाविता का मुख्य निर्धारक कहा गया है। इसकी विद्यमानिता से शिक्षक अपने जीवन एवं व्यवसाय में कुशलता, सामर्थ्य एवं सफलता प्राप्त करने की सम्भावनाओं को सरलता से सुनिश्चित कर लेता है। इसी परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत शोध की संरचना अभिकल्पित की गई है। शिक्षण व्यवसाय से जुड़ने से पूर्व की अवस्था में जब प्रशिक्षु अपने को पाता है तो उसकी व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति ही उसके व्यावसायिक तत्परता की आधारभूमि को मजबूती प्रदान करती है। इसीलिए छात्राध्यापकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति को जानना अपने आप में ही महत्वपूर्ण शोध का मुद्दा माना जा सकता है जिससे व्यावसायिक प्रगति और सफलता सुनिश्चित करने की दिशा में नये मानक एवं पैमाने निर्धारित किये जा सकें। अतः प्रस्तुत अध्ययन को इस दिशा में एक लघु किन्तु महत्वपूर्ण प्रयास के रुप में देखा जा सकता है।

शोध समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दावली का परिभाषीकरण :

यहाँ परम्परागत छात्राध्यापक से तात्पर्य शिक्षाशास्त्री पाठ्यक्रम से जुड़े छात्राध्यापकों से है। इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत दो शिक्षण विषयों में से एक विषय संस्कृत का अध्ययन अनिवार्य होता है और शेष विषय बी0 एड0 पाठ्यक्रम से सामान्यतः जुड़े होते हैं। इसके विपरीत, आधुनिक छात्राध्यापक से तात्पर्य सामान्य विश्वविद्यालय के बी0 एड0 प्रशिक्षुओं से है जिसमें बी0 एड0 के पाठ्यक्रम के अन्य सामान्य विषयों के अतिरिक्त विद्यालय स्तर के दो सामान्य विषयों के शिक्षण का प्रावधान होता है।

शोध का उद्देश्य :

प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्नलिखित उद्देश्यों को निरूपित किया गया :

- छात्राध्यापकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
- परम्परागत एवं आधुनिक संवर्ग के पाठ्यक्रमों में प्रविष्ट छात्राध्यापकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति प्रेक्षित अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना :

प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति प्रथम चर तथा परम्परागत एवं आधुनिक पाठ्यक्रम आधारित प्रशिक्षण की पद्धति द्वितीय चर के रूप में चिन्हित है। इन चरों के मध्य जो सम्बन्ध देखना है उसे आधार मानकर "परम्परागत एवं आधुनिक छात्राध्यापकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर होता है।" इसे शोध की मुख्य परिकल्पना के रूप में उपकल्पित किया गया। इस परिकल्पना के परीक्षण हेतु निम्नलिखित पाँच शून्य परिकल्पनाएँ निरूपित की गईं :

Ho-1: परम्परागत एवं आधुनिक छात्राध्यापकों की शिक्षण व्यवसाय के मनोवैज्ञानिक पक्ष के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

Ho-2: परम्परागत एवं आधुनिक छात्राध्यापकों की शिक्षण व्यवसाय के सामाजिक पक्ष से सम्बन्धित अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

Ho-3: परम्परागत एवं आधुनिक छात्राध्यापकों की शिक्षण व्यवसाय के शैक्षणिक पक्ष से सम्बन्धित अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

Ho-4: परम्परागत एवं आधुनिक छात्राध्यापकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रशासनिक पक्ष से सम्बन्धित अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

Ho-5: परम्परागत एवं आधुनिक छात्राध्यापकों की शिक्षण व्यवसाय के आर्थिक पक्ष से सम्बन्धित अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

शोध का प्रतिदर्श:

प्रस्तुत अध्ययन के लिए परम्परागत छात्राध्यापकों का चयन श्री लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली के शिक्षाशास्त्री तथा आधुनिक संवर्ग के छात्राध्यापकों का दिल्ली विश्वविद्यालय से सम्बन्धित महाविद्यालयों के बी0 एड0 प्रोग्राम से सुविधा चयन विधि के माध्यम से किया गया। प्रतिदर्श का कुल आकार 100 था जिसमें 50 परम्परागत तथा 50 आधुनिक संवर्ग के छात्राध्यापक लिए गये।

शोध में प्रयुक्त उपकरण :

प्रस्तुत अध्ययन में एक स्वनिर्मित लिकर्ट मापनी का प्रयोग किया गया। इस मापनी की संरचना शिक्षण व्यवसाय के पाँच मुख्य पक्षों यथा– मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, शैक्षणिक, प्रशासनिक एवं आर्थिक के आधार पर विकसित की गई। मापनी के अन्तर्गत इन पक्षों से सम्बन्धित सम्पूर्ण कथनों का परीक्षणोपरान्त पद विश्लेषण करके अन्तिम प्रारूप में प्रत्येक आयाम के तहत 10–10 कथन चयनित किये गये। इस प्रकार मापनी में कुल 50 कथन सम्मिलित किये गये जिसमें 25 सकारात्मक तथा 25 नकारात्मक कोटि के कथन हैं। प्रत्येक कथन के अन्तर्गत छात्राध्यापकों को पाँच श्रेणियों में से किसी एक यथा–पूर्णतः सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत तथा पूर्णतः असहमत में अपनी राय अभिव्यक्त करनी थी। सकारात्मक कथनों हेतु अभिव्यक्त अभिमत को क्रमशः 5, 4, 3, 2, 1 तथा नकारात्मक कथनों से व्यक्त अभिमत को क्रमशः 1, 2, 3, 4, 5 भारांक प्रदान करके समेकित प्राप्तांक ज्ञात किया गया।

शोध अभिकल्प:

प्रस्तुत अध्ययन में कार्योत्तर विधि का प्रयोग किया गया है। आधार सामग्री का प्रथम स्तर पर विश्लेषण मापनी में प्रस्तुत शिक्षण व्यवसाय के विविध पक्षों में प्राप्त समेकित प्राप्तांकों के

आधार पर किया गया जिसमें परम्परागत एवं आधुनिक छात्राध्यापकों के प्राप्तांकों को तुलनात्मक अध्ययन की परिधि में लाया गया। द्वितीय स्तर पर विश्लेषण समेकित प्राप्तांकों के पाँच वर्गों यथा– अति उच्च सकारात्मक, सकारात्मक, उच्च सकारात्मक, औसत, निम्न नकारात्मक, अति निम्न नकारात्मक में वर्गीकरण के माध्यम से परम्परागत एवं आधुनिक छात्राध्यापकों की तुलनात्मक स्थिति देखी गयी। अन्त में, इस अध्ययन में निरूपित परिकल्पनाओं का परीक्षण टी–मान के अनुप्रयोग द्वारा सुनिश्चित किया गया।

शोध परिणाम एवं निष्कर्ष :

प्रस्तुत अध्ययन में शोध परिणाम इन तीनों प्रकार के विश्लेषणों के आधार पर निष्पन्न किया गया। इनका उल्लेख निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत है:

(क) समेकित प्राप्तांकों के प्रतिशतीय आधार पर : इसके अन्तर्गत शोध के परिणाम को परम्परागत एवं आधुनिक छात्राध्यापकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति पाँच पक्षों में अभिव्यक्त अभिमत को समेकित प्राप्तांकों द्वारा दर्शाया गया है। इस सन्दर्भ में प्राप्त प्रदत्त तालिका–I में सारांकित हैं।

तालिका–I: शिक्षण व्यवसाय के विभिन्न पक्षों के प्रति प्राप्त समेकित प्राप्ताकों का तुलनात्मक विवरण

शिक्षण व्यवसाय के विभिन्न पक्ष	परम्परागत छात्राध्यापक		आधुनिक छात्राध्यापक	
	समेकित प्राप्तांक	समेकित प्राप्तांक %	समेकित प्राप्तांक	समेकित प्राप्तांक %
1. मनोवैज्ञानिक पक्ष	2033	16.26%	1950	15.6%
2. सामाजिक पक्ष	1884	15.07%	1826	14.6%
3. शैक्षणिक पक्ष	2047	16.38%	1987	15.9%
4. प्रशासनिक पक्ष	1770	14.16%	1750	14.0%
5. आर्थिक पक्ष	1732	13.85%	1670	13.40%
6. शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति	9466	75.72%	9187	73.5%

तालिका–I के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि परम्परागत छात्राध्यापकों के समेकित प्राप्तांक 75.72% तथा आधुनिक संवर्ग के समेकित प्राप्तांक 73.05% हैं। इस तारतम्य में शिक्षण व्यवसाय के मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, शैक्षणिक, प्रशासनिक तथा आर्थिक पक्षों में परम्परागत छात्राध्यापकों के भारांकित प्राप्तांकों का प्रतिशत क्रमशः 16.26%, 15.07%, 16.38%, 14.16% एवं 13.85% तथा आधुनिक छात्राध्यापकों का भारांकित क्रमशः 15.6%, 14.6%, 15.90%, 14.00%, एवं 13.40%, प्रेक्षित किया गया है जिसे आरेख (i) द्वारा भी दर्शाया गया है।

आरेख–I शिक्षण व्यवसाय के विभिन्न पक्षों के प्रति प्रेक्षित आवृत्तियों का तुलनात्मक विवरण

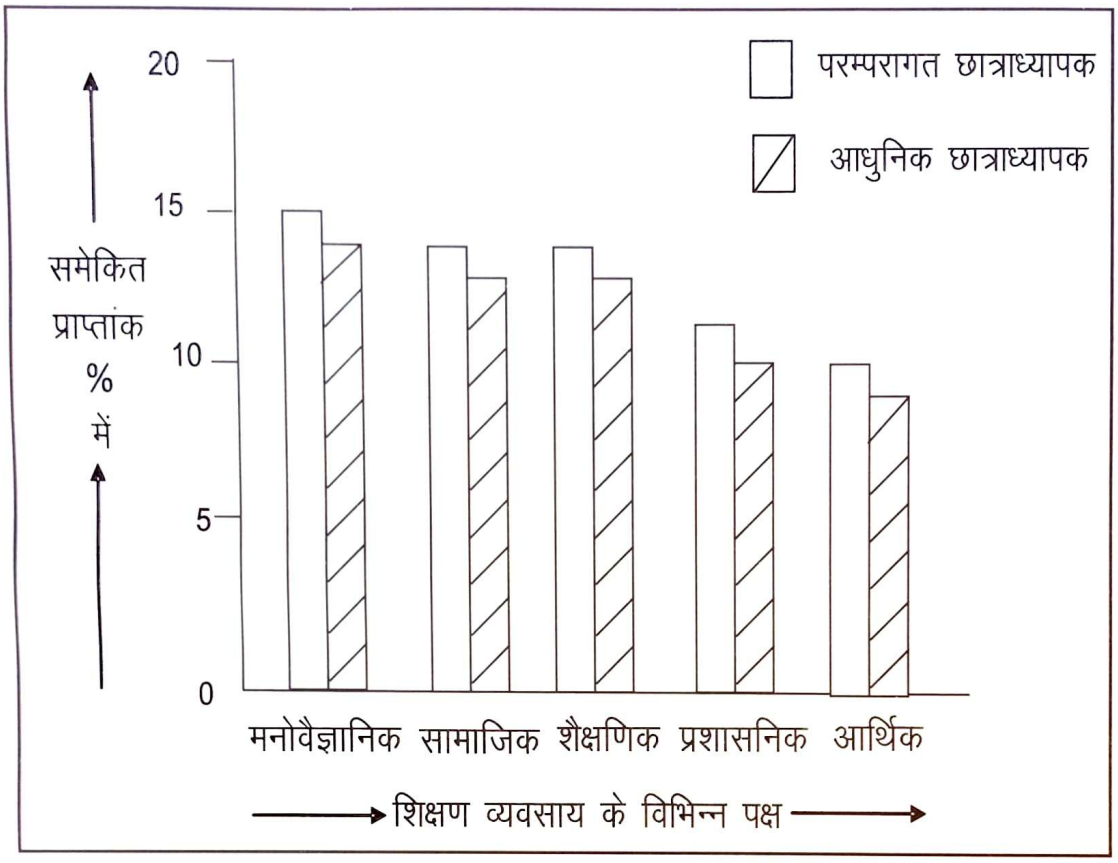

आरेख–(i) के प्रेक्षण से यह विदित होगा कि शिक्षण व्यवसाय के विभिन्न पक्षों के प्रति परम्परागत एवं आधुनिक छात्राध्यापकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक स्वरूप परस्पर भिन्नता नहीं प्रदर्शित करता है तथा यह कहा जा सकता है कि परम्परागत एवं आधुनिक छात्राध्यापकों की शिक्षण व्यवसाय के विभिन्न पक्षों के प्रति अभिवृत्तियाँ लगभग एक समान हैं।

(ख) समेकित प्राप्तांकों के वर्गों के आधार पर विश्लेषण: इसके अन्तर्गत शोध परिणाम को समेकित प्राप्तांकों को पाँच समान वर्गों यथा–अति उच्च सकारात्मक, उच्च सकारात्मक, औसत, निम्न नकारात्मक तथा अति निम्न नकारात्मक अभिवृत्ति के रूप में व्यक्त किया गया। इस परिप्रेक्ष्य में परम्परागत एवं आधुनिक छात्राध्यापकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति प्रेक्षित अभिवृत्तियों को उक्त वर्गीकरण के आधार पर तालिका II में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका–II: परम्परागत एवं आधुनिक छात्राध्यापकों की पाँच विभिन्न वर्गों में प्रेक्षित शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्तियों का विवरण

वर्ग के नाम	वर्गान्तर	परम्परागत छात्राध्यापक		आधुनिक छात्राध्यापक	
		आवृत्ति	आवृत्ति %	आवृत्ति	आवृत्ति %
1. अति उच्च सकारात्मक अभिवृत्ति	210–250	5	10%	5	10%
2. उच्च सकारात्मक अभिवृत्ति	170–210	36	72%	34	68%
3. औसत	130–170	9	18%	11	22%
4. निम्न नकारात्मक अभिवृत्ति	90–130	0	0%	0	0%
5. अति निम्न नकारात्मक अभिवृत्ति	50–90	0	0%	0	0%

तालिका–II के अवलोकन से यह परिलक्षित होता है कि अति उच्च सकारात्मक, उच्च सकारात्मक, औसत, निम्न नकारात्मक तथा अति निम्न नकारात्मक अभिवृत्तियों के वर्गों में परम्परागत छात्राध्यापकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति की वर्गीकरण रूप में स्थिति क्रमशः 10%, 72%, 18%, 0%, 0% तथा आधुनिक छात्राध्यापकों की स्थिति क्रमशः 10%, 68%, 22%, 0%, 0% उपलब्ध है। इस स्थिति को आरेख (ii) के माध्यम से भी प्रदर्शित किया गया है।

आरेख–II परम्परागत एवं आधुनिक छात्राध्यापकों का शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का पाँच वर्गों में तुलनात्मक विवरण

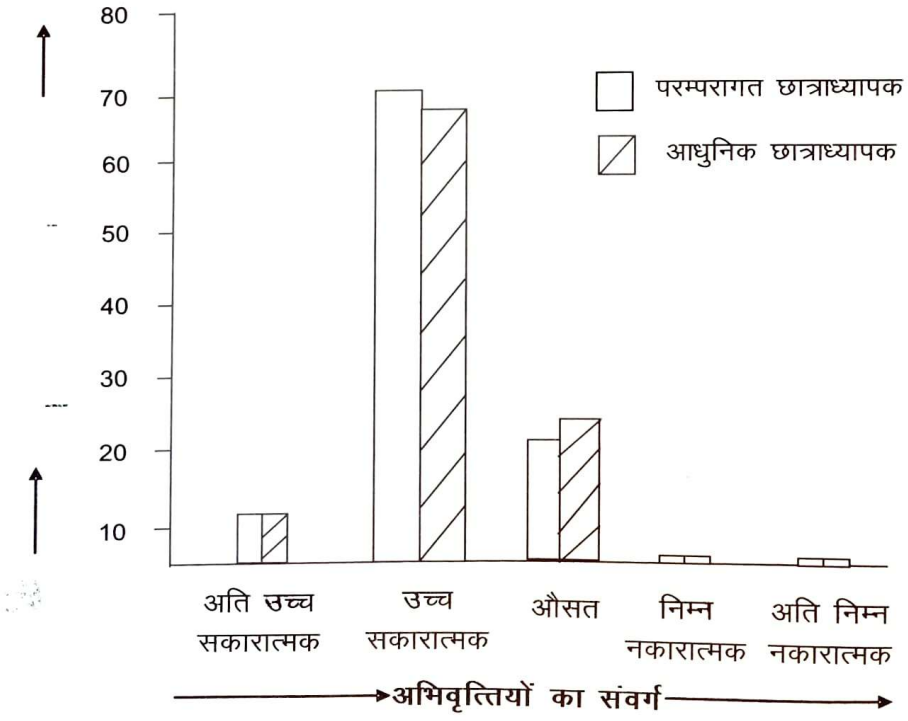

उक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि परम्परागत एवं आधुनिक छात्राध्यापकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति अति उच्च वर्ग में एक समान है जो 10% है जबकि उच्च वर्ग में परम्परागत छात्राध्यापकों की अभिवृत्ति आधुनिक छात्राध्यापकों से थोड़ी अधिक है तथा औसत वर्ग में इसके विपरीत प्रवृत्ति प्रेक्षित की गई। निम्न और अति निम्न वर्गों में दोनों कोटि के छात्राध्यापकों की अभिवृत्तियाँ लगभग नहीं के बराबर पाई गईं।

(ग) शोध परिकल्पनाओं का परीक्षणः इस अध्ययन में उपकल्पित शोध परिकल्पना के परीक्षण के लिए पाँच शून्य परिकल्पनाएँ निरूपित की गईं। इन शून्य परिकल्पनाओं में परम्परागत एवं आधुनिक छात्राध्यापकों के दो स्वतन्त्र समूहों के शिक्षण व्यवसाय के विभिन्न पक्षों के प्रति अभिवृत्तियाँ मापनी से प्राप्त समेकित अंको के मध्यमानों के बीच सार्थक अन्तर के आधार पर जाँची गयी। इस हेतु टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया। इन सभी शून्य परिकल्पनाओं हेतु टी का मान ज्ञात किया गया जिससे सम्बन्धित परिणाम तालिका–III में अंकित हैः

तालिका–III शून्य परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु प्राप्त टी के मान तथा उनसे सम्बन्धित सांख्यिकी के मानों का विवरण

शून्य परिकल्पना संख्या	छात्राध्यापक	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रामाणिक विचलन (S.D.)	मध्यमान की प्रामाणिक त्रुटि (S.E.M)	मध्यमानों के अन्तर की प्रामाणिक त्रुटि	t-मान
Ho 1	परम्परागत	50	40.60	4.62	0.65	1.05	1.6
	आधुनिक	50	38.92	5.85	0.83		
Ho 2	परम्परागत	50	32.72	6.00	0.85	1.19	1.26
	आधुनिक	50	36.22	5.85	0.83		
Ho 3	परम्परागत	50	41.08	5.19	0.73	1.14	1.15
	आधुनिक	50	39.76	6.18	0.87		
Ho 4	परम्परागत	50	35.44	4.47	0.63	0.96	0.31
	आधुनिक	50	35.14	5.16	0.73		
Ho 5	परम्परागत	50	34.60	4.56	0.65	0.97	1.36
	आधुनिक	50	33.28	5.07	0.72		

तालिका–III के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि परम्परागत एवं आधुनिक छात्राध्यापकों की कुल संख्या 50–50 है। प्रथम शून्य परिकल्पना (Ho 1) के लिए परम्परागत छात्राध्यापकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा मध्यमान की प्रामाणिक त्रुटि क्रमशः 40.60, 4.62 एवं 0.65 और आधुनिक छात्राध्यापकों का क्रमशः 38.92, 5.85 एवं 0.83 है। इसी प्रकार द्वितीय शून्य

परिकल्पना (Ho 2) के लिए परम्परागत छात्राध्यापकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा मध्यमान की प्रामाणिक त्रुटि क्रमशः 32.72, 6.00 एवं 0.85 तथा आधुनिक छात्राध्यापकों की क्रमशः 36.22, 5.85 एवं 0.83 है। तृतीय (Ho 3), चतुर्थ (Ho 4) एवं पंचम (Ho 5) शून्य परिकल्पनाओं के लिए परम्परागत छात्राध्यापकों का मध्यमान क्रमशः 41.08, 35.44 एवं 34.60, प्रामाणिक विचलन क्रमशः 5.19, 4.47 एवं 4.56 तथा मध्यमान की प्रामाणिक त्रुटि क्रमशः 0.73, 0.63 एवं 0.65 है और आधुनिक छात्राध्यापकों का मध्यमान क्रमशः 39.76, 35.14 एवं 33.28 प्रामाणिक विचलन क्रमशः 6.18, 5.16 एवं 5.07 तथा मध्यमान की प्रामाणिक त्रुटि क्रमशः 0.87, 0.73 एवं 0.72 है। सभी पाँच शून्य परिकल्पनाओं के मध्यमानों के अन्तर की प्रामाणिक त्रुटि क्रमशः 1.05, 1.19, 1.14, 0.96 एवं 0.97 है तथा टी–मान क्रमशः 1.6, 1.26, 1.15, 0.31 तथा 1. 36 प्राप्त हुए हैं। ये सभी प्राप्त टी–मान $(df = 98)$ द्वि–पुच्छीय सार्थकता परीक्षण के लिए दोनों विश्वास स्तरों 0.01 एवं 0.05 के मानों क्रमशः 2.61 एवं 1.98 से कम हैं, इसलिए परम्परागत एवं आधुनिक छात्राध्यापकों के दोनों समूहों के मध्य प्रेक्षित अन्तर सार्थक नहीं है और सभी शून्य परिकल्पनाएँ स्वीकृत होती हैं। फलस्वरूप वैकल्पिक शोध परिकल्पना अस्वीकृत होती है। दूसरे शब्दों में, परम्परागत एवं आधुनिक छात्राध्यापकों के मध्य शिक्षण व्यवसाय के विभिन्न पक्षों के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् उनकी अभिवृत्तियाँ लगभग एक समान हैं।

अतः तीनों दृष्टियों से विश्लेषित परिणामों से यह निष्कर्ष निगमित किया जा सकता है कि परम्परागत एवं आधुनिक छात्राध्यापकों को शिक्षण व्यवसाय के विभिन्न पक्षों यथा मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, शैक्षणिक, प्रशासनिक और आर्थिक के प्रति अपनी अभिवृत्तियों को सकारात्मक रूप में अति उच्च स्तर का बनाना होगा जिससे उनकी व्यावसायिक कुशलता में अभिवृद्धि सुनिश्चित हो सके। साथ ही, यह भी निष्कर्ष निरूपित किया जा सकता है कि परम्परागत एवं आधुनिक छात्राध्यापकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एक समान है जिससे यह कहने में अत्युक्ति नहीं होगी कि इनके प्रशिक्षण कार्यक्रमों में विविधता या भिन्नता लाने का प्रयास प्रभावी आकार नहीं प्राप्त कर सकता।

शैक्षिक निहितार्थ :

21वीं सदी के उभरते नवीन परिप्रेक्ष्य में किसी भी व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति उस व्यवसाय में प्रवीणता, गुणवत्ता एवं उत्कृष्टता के मुद्दों से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में सम्बन्धित होती है। इस दृष्टि से शिक्षण व्यवसाय का क्षेत्र अछूता नहीं है। इधर गुणवत्ता के प्रश्न पर अध्यापक शिक्षा में जो चिन्ताएँ व्यक्त की जा रही हैं, इस आलोक में भी शिक्षकों की व्यावसायिक प्रगति एवं प्रभाविता सुनिश्चित करने की दृष्टि से उनकी अभिवृत्तियों का विशेष अवदान सुनिश्चित किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष से यह संकेत प्राप्त होता है कि

परम्परागत एवं तथाकथित आधुनिक प्रशिक्षण व्यवस्थाओं के प्रशिक्षुओं की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्तियों को इस महत्वपूर्ण व्यवसाय के मुख्य पक्षों (यथा–मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, शैक्षणिक, प्रशासनिक एवं आर्थिक) के परिप्रेक्ष्य में उपकल्पित एवं रूपायित करते हुए उन्हें प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अविच्छिन्न घटक के रूप में शामिल करने की महती आवश्यकता है जिससे वर्तमान सन्दर्भ में उभरती चुनौतियों से निपटने हेतु अध्यापक शिक्षा के लिए चयनित प्रशिक्षुओं में अपेक्षित आत्म–सामर्थ्य विकसित हो सके। शिक्षण व्यवसाय के प्रशासनिक एवं आर्थिक पक्षों को सबसे अधिक प्रभावी एवं सबल बनाने की आवश्यकता भी इन निष्कर्षो के आधार पर रेखांकित की जा सकती है।

संदर्भ ग्रन्थ :

- गैरी. डी. बोरिच (2012): इफेक्टिव टीचींग मैथडस–रीसर्च बेस्ड प्रैक्टिस; पीयर्सन।
- पाण्डेय के0 पी0 (2008): शैक्षिक अनुसंधान; विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी।
- पाण्डेय के0 पी0 (2007): शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी; विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
- ब्रूस डब्ल्यू टकमैन इन ऐलन सी आरेनस्टाइन (स) टिचींग (1995): थ्योरी इनटू प्रैक्टिस; एलिन एण्ड बेकन यू0एस0ए0।
- महेश भार्गव (2001): आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन; भार्गव बुक हाउस, आगरा।
- मंगल एस0 के0 (2009): शिक्षा मनोविज्ञान; प्रेन्टिस हॉल, नई दिल्ली।